# अरविन्द कुमार त्रिपाठी
# द्वारा
# पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन







धातु शिल्प आभूषण, गुदना
**Metal Craft Ornament Tattoo**

**Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan**

**Arvind Kumar Tripathi**

**ISBN : 978-93-5906-820-6**

धातु शिल्प आभूषण, गुदना **Metal Craft Ornament Tattoo**

| | |
|---|---|
| अध्याय शीर्षक | धातु शिल्प आभूषण, गुदना |
| सर्वाधिकार | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक |
| आइ एस बी एन/ **ISBN** | **978-93-5906-820-6** |
| प्रकाशक | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक<br>ग्राम – अछरौन्ड,<br>बान्दा – 210 001<br>उत्तर प्रदेश |
| मूल्य | निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना |
| सन्स्करण | प्रथम, 01 अप्रैल 2020 |
| आवरण/मुखपृष्ठ | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक |
| शब्द – संयोजन | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक |
| मुद्रक | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक |
| सन्दर्भ/साभार/सौजन्य | अध्याय **Reference** देखे |

| | |
|---|---|
| **Chapter Heading** | **Metal Craft Ornament Tattoo** |
| **Copyright @** | **Arvind Kumar Tripathi, The Writer** |
| **ISBN** | **978-93-5906-820-6** |
| **Publisher** | **Arvind Kumar Tripathi**<br>**Village - Achharaund**<br>**Banda - 210 001**<br>**Uttar Pradesh** |
| **Price** | **Free, Circulate to Friends** |
| **Edition** | **First, 01 April 2020** |
| **Cover Main** | **Arvind Kumar Tripathi, The Writer** |
| **Word Compositor** | **Arvind Kumar Tripathi, The Writer** |
| **Printer** | **Arvind Kumar Tripathi, The Writer** |
| **Reference/ Gratitude/ courtesy** | **Peruse Chapter - REFERENCE** |

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

धातु शिल्प आभूषण, गुदना **Metal Craft Ornament Tattoo**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – बान्दा क्षेत्र के आभूषणों का संक्षिप्त वर्णन

धातु शिल्प आभूषण, गुदना **Metal Craft Ornament Tattoo**

# अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

## आभूषण

लोकजीवन में आभूषण का महत्वपूर्ण स्थान है। यह मानव को आकर्षक बनाने, सौन्दर्य को बढ़ाने के साथ–साथ समृद्धि का भी प्रतीक होते हैं। सामान्य जन अपनी साज–सज्जा मे सोने, चान्दी, पीतल आदि के आभूषणों का प्रयोग करते है। इन आभूषणों में मोती, माणिक्य, पन्ना, हीरा आदि का प्रयोग गहनों में चार–चान्द लगाने के लिए किया जाता है। बुन्देली लोग अपनी सामर्थ्य के अनुसार गहनों का प्रयोग करते है।

आभूषण–

यहां के आभूषण केवल सम्पन्नता के प्रतीक ही नहीं हैं उनका कलात्मक महत्व भी है। आर्थिक स्तर के हिसाब से उनका अपना अपना स्थान प्रावधान है। आर्थिक दृष्टि से जन सुलभ, धन–धान्य के प्रतीक जवारी – जौ के दाने, मखाने, सुपारी, नारियल आदि को पिरो कर बनाई गई है। जच्चा नारी / सद्यप्रसूता का इससे बड़ा क्या सम्मान हो सकता है।

लोकान्चल में पहने जाने वाले आभूषण विज्ञान की दृष्टि से अध्ययन का विषय हैं। पैरों में भारी पैन्जना, हाथों में मोटे ककना तथा गले में भारी हंसली (खंगौरिया) पहनना केवल समृद्धि–प्रदर्शन या सौन्दर्य के लिये नहीं, स्वास्थ्य के लिये लाभकारी है। बुन्देलखण्ड के आभूषणों की सन्रचना तथा वजन एक्यूप्रेशर प्रणाली के अनुरुप किन बिन्दुओं पर कितना दबाब बनाता है, इस पर शोध अपेक्षित है। डा0 कमल प्रकाश अग्रवाल ने अपने आलेख–आभूषण द्वारा शरीर एवम् स्वास्थ्य को लाभ (स्वागत–इंडियन एयर लाइंस पत्रिका, अक्टूबर 1998) में आभूषणों को सौन्दर्यवर्द्धक होने के साथ तथा विज्ञान सन्गत माना है।

आभूषण लोकसन्स्कृति के लोकमान्य अंग है। सौन्दर्य की बाहरी चमक–दमक से लेकर शील को भीतरी गुणवत्ता तक और व्यक्ति की वैयक्तिक रूचि से लेकर समाज की सांस्कृतिक चेतना तक आभूषणों का प्रभाव व्याप्त रहता है। आभूषणों के उपयोग का प्रभाव तन–मन दोनों पर पड़ता है। उनके धारण करने से शरीर का सौन्दर्य ही प्रकाशित नहीं होता, वरन् स्वास्थ्य भी सुरक्षित रहता था। शरीर–विज्ञान के आधार पर ही आभूषणों का चयन किया गया है। पायल और कड़े धारण करने से एड़ी, टखनों और पीठ के निचले भाग में दर्द नहीं होता। ज्योतिषविदों ने ग्रह–नक्षत्रों के प्रभाव से आभूषणों के प्रभाव का सम्बन्ध स्थापित कर एक नयी दिशा खोली है। ग्रहो के बुरे प्रभाव को निस्तेज करने के लिए निश्चित धातुओं और रत्नों का चयन और आभूषणों में उनका प्रयोग महत्वपूर्ण खोज है। लक्ष्मण जी इस कथन से शील की पहचान का उदाहरण प्राप्त होता है–

नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुण्डले। नूपुरे त्वभि जानामि नित्यं पादभिवन्दनात्।

(न तो मैं इन बाजूबन्दों को जानता हूँ और न इन कुण्डलों को लेकिन प्रतिदिन भाभी के चरणों में प्रणाम करने के कारण इन दोनों नूपुरो को अवश्य पहचानता हूं।)

आभूषण सौभाग्य का प्रतीक भी होते है, जिन्हें देखकर परिणता नारी की पहचान होती है। आभूषणों से जुड़े लोकविश्वास लोकसन्स्कृति के अवयव है।

शास्त्रकारों के अनुसार बारह आभूषण प्रमुख हैं, जो कि बारह अंगो को प्रमुख रूप से आभूषित करते है। रीतिकालीन बुन्देली कवियों ने नख–शिख वर्णन में आंगिक सौन्दर्य के साधन होने के कारण इनका वर्णन अपने काव्य ग्रन्थों में किया। इसी तरह इस सम्बंध मे लोककवियों ने भी आंगिक सौन्दर्य एवम् आभूषणों का वर्णन कर अपनी रूचि व्यक्त की। फागकारों, सैरकारों एवम् फड़काव्य के कवियों ने आभूषणों पर रचनाएँ की है, ये वर्णनप्रधान या प्रभावात्मक है, उदाहरण–

"वेनी भाल माँग, श्रुत नासिका के बलभद्र, कंठ के कनक के सुवरन अपार है।
भुज पुहिचांने कर पल्लव के कौन गनै, उरन के मंडन जिते हमेर हार है।
कटि मुखान के सुघयन को आँगुरी के, विद्यया आदि दैके जिनकौ इनकार है।
चीर मन–धातूर सुगंध बार अलन्कार, बारह आभरन ये सोलह सिन्गार है।
बुन्देलखण्ड की लोकसन्स्कृति का इतिहास– नर्मदा प्रसाद गुप्त (पृ–237)

बुन्देलखण्ड में पहने जाने वाले प्रमुख आभूषण निम्न हैं–

## अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

### धातु शिल्प व आभूषण

धातुओं में हम सबसे पहले आभूषणों की कलात्मकता से परिचित होना चाहेगे। आभूषण सौन्दर्य को बढ़ाने वाले तथा समृद्धि के प्रतीक होते हैं। वैदिक कालीन चित्रकला में स्त्री–पुरूष आभूषणों से अलंकृत चित्रित किये गये हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानव ने प्राचीन चित्रों व मूर्तियों मे आभूषण धारण किये स्त्री–पुरुष सुन्दरता से प्रभावित होकर स्वयम् भी आभूषण धारण किये होगे। शासक वर्ग में सोने व रत्न जड़ित आभूषण प्रयोग किये जाते थे। सामान्य वर्ग अपनी सज्जा के लिये सोना, चाँदी, रूपे, पीतल आदि धातु के आभूषण प्रयोग करता था। उसमे मोती, मनके भी लगे रहते थे। इन आभूषणों को बनाने वाले सुनार सुघड शिल्पकार तथा चित्रकार होते थे। वे कल्पना या प्रेरणा से आभूषणों के चित्र बनाकर, अपनी कुशलतानुसार उन्हें साकार रूप प्रदान करते थे।

प्रत्येक क्षेत्र के आभूषण की बनावट अलग अलग होती है। उनके नाम भी मिन्न होते है। इसी प्रकार बुन्देलखण्ड में भी अनेक कलात्मक आभूषण तैयार किये जाते हैं। यहाँ महिला, पुरूष व बालक–बालिकाओं के पहनने वाले आभूषण अलग–अलग हैं।

इन सभी आभूषणों की कलात्मक डिजाइनें स्वर्णकारों और बुन्देलखण्ड के लोक जीवन की कलात्मक अभिरूचि की प्रतीक होती है।

लोक जीवन में अन्य धातुयें जैसे– लोहा, पीतल आदि से बने बर्तन गृहस्थी के सामान में प्रयुक्त किये जाते हैं। लोहे से बने कृषि यंत्र, कृषि कार्यों मे प्रयुक्त किये जाते हैं। लोहे से बने कृषि यंत्र, कृषि कार्यों मे प्रयुक्त कलात्मकता और लोक–जीवन की आवश्यकताओं के प्रतीक है। इनकी निर्माण विधियाँ तथा आकृति भी प्राचीन कला व सन्स्कृति से प्रभावित होती है।

### स्त्रियों के आभूषण

स्त्रियोचित आभूषण

स्त्रियोचित आभूषण की बात न की जाय तो अनुचित होगा। स्त्रियोचित आभूषण, किसी भी स्त्री की सुंदरता में चार चान्द लगाता है। बान्दा और आसपास के कुछ गहने निराले ढन्ग के होते हैं। निश्चित रूप से सभी आभूषण सोना, चान्दी, कान्सा, पीतल, कान्च, सीपी शन्ख आदि के बनते हैं। लाख और कान्च की चूड़ियां का भी प्रचलन शुरु हो चुका है। यह सभी आभूषण घर की परिस्थितियों और आर्थिक सम्पन्नता के अनुसार ही खरीदे व उपयोग में लाए जाती है। सिर से लेकर पैर की उंगलियों तक हर तरह के विभिन्न आभूषण उपलब्ध है।

माथे के बीच और सीसफूल<br>
कानों के कर्णफूल और सांकर<br>
गले की खगोरियां और हमेंल<br>
हाथों के बारा और खग्गा होते हैं।<br>
पैरों के जेवर में पैजनां, सान्कर या सान्कल, अनोटा व बिछिया आदि है।

यह सब गहने वजन में भारी होते थे और हैं। उस समय की तकनीक के कारण, हलका आभूषण बनाना सम्भव नहीं रहा है। हल्के और पतले आभूषण बनाना उस समय सम्भव नहीं था और उपकरण भी इस तरह के नहीं थे कि वह बहुत हल्के बनाए जा सके। सधवा / विवाहित स्त्रियों के हाथों और पैरों में कोई न कोई जेवर अवश्य होता है, जैसे बिछुआ, सोने चान्दी या कान्च की चूड़ियां आदि।

महिलाओं के आभूषण बहुत सन्ख्या में होते हैं उनमे से प्रमुख हैं–

पुराने समय में स्त्रियां विभिन्न प्रकार के आभूषणों को धारण करती थे जिनका विवरण आगे दिया गया है। समय के साथ–साथ आभूषण पहनने का प्रचलन कम होता जा रहा है। सामान्य जीवन में बहुत कम ही आभूषण पहने जाते हैं। शादी विवाह के अवसर पर दुल्हन, अभी भी सारे आभूषणों को पहने दिखाई देती है। वर्तमान 2000 ईस्वी में यह सारे आभूषण चाहे नकली ही हो, किराए पर मिल जाते हैं और शादी विवाह का रीति रिवाज सम्पन्न हो जाते हैं। लेकिन पुराने समय में निम्न सारी चीजें दुल्हन को दी जाती है।

### धातु शिल्प आभूषण, गुदना **Metal Craft Ornament Tattoo**

## अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

पैरों से सिर तक वर्णन

1. पैरों की अंगुलियो के आभूषण– बिछिया, अनौठा, गरगज के छला, छैल– चूड़ी, महावर, पैरियाँ झान्झे, चल्ला, पैन्जना, पोतें, पावपोस, बतसिया–बिछिया, खारीबिछिया, जुड़वा, मछली, गुटियाँ, गुच्छी, गेदें बिरमिदी, कंटीला, बान्कें, चुटकी, बिरमिदी।

2. पैर, टखना/कूर्च के आभूषण– अनौठा/अनौखा, अगौठा, कड़ा, अनोखा, घुन्घरिया–घुँघरु, छला, औनूपुर, गूजरी और गुजरियाँ, झान्झे, छैलचूड़ी, छड़ा, चूरा, छागल, जेहर, टोडर, तोड़ा, चुल्ला, पायजेब, पायल, पाँवपोस, पैजनियाँ, पैदना, पैन्जना, पैरियाँ, बान्के, रुल, साकें, लच्छा, महाउर, आयल एवम् पैन्जना/ पैजना आदि।

ईसुरी ने पैजना का इस प्रकार वर्णन किया है–

चकतन परत पैजना छनके, पॉउन गोरी धन के।
सुनतन रोम–रोम उठ आउत, धीरज रहत न तन के।।
घूटे फिरत गैल–खोरन में, सुर मख्त्यार मदन के।
ईसुरी कौन कसाइन डारे, जे ककरा कसकन के।।

3. कमर के आभूषण– करधनी/करधौनी, बिछुआ, पेटी, झालरदार छटा/छूंटा, तांबे के कटिसूत्र आदि।

4. हाथ की अंगुलियों के आभूषण– मुँदरी, अँगूठी, छला, छाप, फिरमा, मानिक, नीलम, पन्ना, पुखराज और लहसुनिया जड़े होने से नौ रत्नी कहलाती है, हाथपोस, दस्तबन्द, अंगोस्थानी आदि।

अर्स्याऊ, जहरयाऊ, इत्रयाऊ, हथफूल, दस्तबद, ककना, बंगरी, गजरियां, पटेला, नौगराई आदि भी पहनती है।

5. कौचा के आभूषण– कड़ा, ककना, गुँजें, चुरियाँ, चूरा/ चुरा /चूड़ा, गजरा, गजरिया और कटीला, गजरा, कौंचियाँ या पौंचियाँ, छल्ला और छन्नी, टैंतिया, दौरी, दस्तबन्द, नौगरई या नौघरई, बंगलियाँ, पटेला, पटेली और पाटला, बताने, बेलचूड़ी, रून झुनियाँ, रत्नचौक, लाखें, हरैया, हथफूल या पानफूल, चुरियां।

6. बाजू के आभूषण– अनन्ता और अनन्तियो, खग्गा, टडिया, बखौरियाँ, बगुआं, बाकें, बीय, बहुँटा, बोध्य, बरा, भुजबन्द आदि प्रमुख हैं।

कुहनी के ऊपर– बरा, बजुल्ला, बान्के, बाजू बन्द, भुज बन्द, बखौरिया, बगुआ, बेंगुआ आदि प्रमुख हैं। ईसुरी की फागों में आभूषणों का उल्लेख निम्न है–

पैरे रजउ ने प्रान हरन के, ककना कमल करन के,
बइयन पै बाजूबन्द बान्दे, बिगरु सन्ग बरन के।
छापें–छरन बनजुल्ला–छल्ला, गजरा कैऊ लरन के,
तकत तीर से लगत, ईसुरी जे नग तरन के।।

7. गले के आभूषण– कठला, कण्ठमाला, करसली, गुलूबन्द, खंगोरिया, कटमा, चंदनहार, चंद्रहार और चंदेरिया, चम्पो, चम्पाकली हार, टकार, टकावर और टकमावर, ठुसी, ढुलनियाँ, तबीजिया, तिन्दाना, तिदानौ/तिबानौ, पाटिया, धुकधुकू, जलज कंठुका, कंठा, गुंज, गुलूबन्द, हार, हमेल, हंसली, मोहनमाला, सुतिया, मंगलसूत्र, माला, मटर माला, विचौली, मालायें लल्लरी, आदि पहनती हैं।

8. कर्ण के आभूषण– कर्णफूल/कनफूल, कनौती, ऐरन, कुण्डल, टरकी, झुलमुली, झुमकी, ढारे, तरकुला, खूटी, खुटियाँ, खुटीला, लाला, लोलक, बिजली, नगफनियाँ, तरौना, वंदनी, बारी, बाला, फल्ली या बैकुण्ठी बुंदे, झाला, रिन्ग आदि।

9, नाक के आभूषण– झुलनी, टिप्पो, कील, दुर, नथ–नथुनियाँ, बारी, सिरजा, बुल्लाख, पुगरियाँ, नकमोती, नकवेसर या वेसर, नकफूली, खुटिया आदि धारण करती हैं।

## धातु शिल्प आभूषण, गुदना Metal Craft Ornament Tattoo

10. माथे के आभूषण– टीका, टिकली, तिलक, बून्दा, दाउनी या दीवानी।

11. सिर के आभूषण– झूमर, बीज, सीसफूल, माँगफूल, चूड़ामणि, रेखड़ी, कौकरपान या केकखान, सरपेंच, बैंदी, बैंदा, बेन्दिया, खुसमा, कलगी, खौर आदि धारण करने का रिवाज है।

12. बेनी(चोटी) के आभूषण– बेनीपान, झबिया, बेनीफूल, छेल–रिजौनी, चुटिया या चुटीला।

## पुरूषों के आभूषण

1. पैर के आभूषण– कड़ा, चूड़ा/चूरा, तोड़ा आदि।

2. हाथ के आभूषण– छल्ला, मुदरी, चूडा, कड़ा, फिरमा आदि पहनते हैं।

3. गले के आभूषण– कण्डा, कंठा, गजरा, गुंज, गोप, जंजीर, टौक, तबिजियाँ, मोतीमाल, बनमाल, हार आदि धारण करते हैं।

4. कान के आभूषण– कुण्डल, लौंग, बारी, गुखरू, चौकड़ा, मुरकी, गुरखुरु, तिकड़ी, झेला आदि।

### बच्चों के आभूषण

बालकों के आभूषण भी लगभग पुरुष स्त्रियों के आमूषणों जैसे ही छोटे आकार के होते हैं।

1. पैर के आभूषण– चूरा, तोड़ा, कड़ा एवम् पैजनियाँ।

2. कटि के आभूषण– करधौनी, डोरा एवम् छूंटा आदि पहनते हैं।

3. हाथ के आभूषण– कड़ा, चूरा, पौचिया पहनाई जाती हैं।

4. गले के आभूषण– तबिजिया, कठुला, कठुली, गजरा(सूरज–चांद) बघनख, जंजीर आदि पहनाई जाती हैं।

5. कान के आभूषण– बारी, लौंग, कुण्डल आदि आभूषण पहनाये जाते हैं।

केशवदास के एक ही छन्द में सभी आभूषणों की जगमगाहट से नायिका के शरीर में दीपमालिका की कल्पना की है।

बिछिया अनौर बाँके घुंघरु जराय जरी, जेहरि छबीली छुद्रधंटिका की जालिका।
मून्दरी उदार पौंची कंकन बलय चूरी, कण्ठ कण्ठमाल हार पहरे गुणालिका।।
वेणीफूल सीसफूल कर्णफूल मांगफूल, खुटिया तिलक नकमोती सोहै बालिका।
केशवदास नील बास ज्योति जगमग रही, देह धरे स्याम सन्गमानो दीपमालिका।।

## अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

## गोदना / गुदना

लोक जीवन से गोदना का बहुत महत्व है। यह चित्रकारी मानव शरीर पर की जाती है। स्त्रियाँ गोदना गुदवाना बहुत पसन्द करती है। पुरूष भी गोदना गुदवाते हैं। लगभग सम्पूर्ण भारत में गोदना गुदवाने की प्रथा है, किन्तु क्षेत्रीयता के आधार पर उनकी आकृतियों मे अन्तर होता है। बुन्देलखण्ड की गोदना कला अत्यन्त प्राचीन है, इसके प्रमाण भी मिलते है। गुदना गुदवाने के कुछ लोक–विश्वास भी होते हैं जैसे– शारीरिक सौन्दर्य वृद्धि, शरीर अलन्करण, जादू–टोने से सुरक्षा आदि। इनमे धार्मिक, प्राकृतिक प्रतीक, पशु, पक्षी, फूल अपना और प्रिय का नाम गुदवाना अत्यन्त प्रचलित है। गोदना गोदने वाली को गुदनारी कहते है।

शारीरिक सौन्दर्य वृद्धि, शरीर अलन्करण के लिए वर्तमान में गुदना न कह कर टैटू कहते है। कुछ पेन्टिग करा लेते है। गुदना पेन्टिग के वर्तमान में बहुत सारे तरीके है।

गोदना गोदने का पारम्परिक तरीका है– शुद्ध घी के दिये की कालिख, बेल की हरी पत्तियों का रस और बेल की गोन्द मिलाकर मिश्रण तैयार करते हैं। उसको आक के कांटे में लगाकर शरीर के अन्गो पर चुभाकर गोदना गोदा जाता है।

टोणियों के पत्ते का रस, अकौवा का दूध, कजली के साथ मिलाकर गोदना लेप तैयार किया जाता है।

उपरोक्त समस्त कलाओं का चित्रकला से अन्तर्सम्बन्ध है। इनका विवेचन जिस प्रकार शास्त्रो और प्राचीन ग्रंथों में किया गया, वैसा ही लोक में चित्रित किया गया और शिल्पकारो ने प्रदर्शित किया इन्हीं के आधार पर हम समाज व सन्स्कृति के ऐतिहासिक और वर्तमान तथ्यों को उद्घाटित कर सकते है।

इसी दृष्टिकोण से यदि यह स्वीकार कर लिया जाये कि लोक निर्माण मे लोक–कलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। लोक–कलायें मानव जीवन को अनुरन्जित करती है। वह समानता, स्वतन्त्रता और भाई चारे की तरन्गो से उद्वेलित रहती है तथा एवम् लोकतन्त्र की भावना से परिपूरित है। लोक के प्रति अदम्य निष्ठा को आत्मसात किये हुये लोक–कला समस्त लोक से सम्बन्ध स्थापित रखती है।

यहाँ की महिलायें गोदना गुदवाना बहुत पसन्द करती है यह चित्रकारी मानव शरीर के अंगो पर की जाती है। गोदना लगभग सम्पूर्ण भारत में प्रचलित है। बुन्देलखण्ड में यह कला अत्यंत प्राचीन है। गुदना गुदवाने के कुछ लोकविश्वास भी होते हैं–

1. शरीर अलन्करण, शारीरिक सौन्दर्य एवम् प्रिय को रिझाने के लिए।
2. प्रजनन शक्ति को बढ़ाने के लिए।
3. जादू टोने से सुरक्षा के लिए।

हमीरपुर जिले में राठ के आस–पास तथा ललितपुर जिले में सहरिया जाति में गुदना गुदवाने की मान्यतायें अभी भी जारी हैं। बुन्देली लोकविश्वास है कि मृत्यु के बाद गोदना आभूषण ही शरीर के साथ जाता है। पुरुष शौकिया कोई चिन्ह अन्कित करा लेते हैं। महिलाओं के शरीर पर चार प्रकार के गोदना अन्कित रहते हैं।।

1. धार्मिक प्रतीक चिन्ह
2. प्राकृतिक प्रतीक चिन्ह– पशु, पक्षी, फूल आदि
3. नाम– स्वयम् या प्रिय का नाम, इष्टदेव का नाम
4. अन्य गुदने– कुंआ, तीर आदि।

यह आदिवासी जातियों (बैंगा, भील, गोन्ड, कोरकू, देवार, बिन्झबार, अगरिया, कमार आदि) एवम् गावों की महिलाओं तथा पुरुषों के बदन पर गोदी जाने वाली लोककला है। शरीर के विभिन्न अन्गो पर धार्मिक चिन्ह, प्राकृतिक चिन्ह, ज्यामितीय, रेखान्कन अथवा नाम(स्वयम् का, इष्टदेव अथवा जीवन साथी का अन्कन) कराते है।

टोणियों के पत्ते का रस, अकौवा का दूध, कजली के साथ मिलाकर गोदना लेप तैयार किया जाता है। गोदना चित्रकारी करने वाली स्त्रियों को गुदनारी कहते हैं। गोदना हाथ एवम् मशीन से भी गोदे जाते हैं। गोदना ज्यादातर लोकान्चल मेलों में गोदे जाते हैं।

## धातु शिल्प आभूषण, गुदना Metal Craft Ornament Tattoo

# अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

वर्तमान भारतीय समाज में "स्थायी आभूषण के रुप में प्रचलित यह अलन्करण अब धीरे–धीरे बीते कल की बात बनता जा रहा है। अब इसकी जगह रन्गा–बिरन्गे टैटू लेते जा रहे हैं। यह नारी मन के समझाने व जानने का एक सशक्त माध्यम है। गुदना न सिर्फ भारत में अपितु सन्सार के विभिन्न मानव कुटुम्बों मे प्राचीन काल से आज तक निरन्तर प्रतिपादित होता आ रहा है, बस उसका रुप बदलता रहा है।

इन सन्रचनाओं में जबर्दस्त कलाबोध है। परम्परा की इस विरासत में प्रतीको का सुन्दर प्रयोजन–मूलक तथा सुरुचिपूर्ण समावेश है। इनमें अनेक प्रतीक प्रयोग किये जाते हैं तथापि कुछ प्रतीक अधिकांश आलेखनों में मिलते हैं। यहाँ उनके अर्थ तथा भाव–बोध की चर्चा प्रासन्गिक है।

सान्तिया (स्वस्तिक)– यह गणेश जी का लिपीय स्वरुप है। यह गतिशीलता का प्रतीक है। क्षेम एवम् विघ्नरहित कार्यों के प्रतीक रुप में चित्रित किया जाता है। गणेश जी का चित्र न बनाकर स्वस्तिक (सान्तिया) बना दिया जाता है। इसका अर्थ है स्वस्ति (यानी मंगल) करने वाला। चक्राकार सान्तिया भी इसी का विकसित रुप है। स्वस्तिक अनेक धर्मा में आस्था का प्रतीक है। ईसाई धर्म का क्रास इसी क्रम में गिना जाता है।

दीपक– यह सहजता, पावनता, शुभ्रता, सात्विकता तथा अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का प्रतीक है। इसकी ज्योति ज्योति–लक्ष्मी का प्रतीक है।

कमल व शंख– यह पवित्रता और ज्ञान के प्रतीक हैं यह सिन्धुज होने के कारण लक्ष्मी के अनुज हैं। जहां यह रहेंगे, लक्ष्मी का आगमन होगा ही। यह उत्पादक शक्ति, शुचिता, अलिप्तता तथा शाश्वत–शोमा के प्रतीक हैं। बंगाल तथा कुछ अन्य प्रांतों में शंख की चूड़ी दाम्पत्य पवित्रता के रुप में पहनी जाती है।

सूर्य तथा चंद्र– यह दोनों शाश्वतता, चिरन्तनता, तथा पवित्रता क प्रतीक है। सूर्य तेजस्विता, गतिशीलता, जीवंतता तथा अन्न जलदाता होने के कारण जगपालक होने तथा आरोग्यता का प्रतीक है। पूर्ण चंद्र पूर्णता का प्रतीक है।

कलश तथा घटधारिणी महिला– कलश सम्पन्नता, परिपूर्णता तथा सम्मान का प्रतीक है। घटधारिणी महिलायें समृद्धि वाहक–देवी (घट लक्ष्मी) का प्रतीक हँ।

गज तथा अश्वारोही– यह समृद्धि एश्वर्य, शक्ति–सम्पन्न तथा सामर्थ्यवान के प्रतीक हैं। श्री सूक्त में इनकी गणना श्री के विविध रुपों में की गई है।

पैरों के निशान– श्रीचरण अथवा लक्ष्मी के शुभागमन के प्रतीक हैं।

हथेलियों की छाप– पंचतत्वों की समग्रता, पंचों की साक्षी, पारिवारिक एकता सात्विकता तथा दो हाथों की छाप युगल सहयोग की प्रतीक है।

सीढ़ी– उत्तरोत्तर प्रगति का द्योतक है।

मोर– जीवन में सौन्दर्य–बोध एवम् रुचि–विविधा का प्रतीक है।

इन अर्थों को समझने के बाद हम इन आलेखनों को गौर से देखें। उदाहरण के लिये शिशु जन्म पर दरवाजे के बाहर दीवाल पर गोबर लीपकर गोबर से बनाये गये चक्राकार–सांतिया (भये के सांतिया) की ओर देखें– यह गोबर से बनाते हैं तथा थोड़ी थोड़ी दूर पर जौ के दाने इस प्रकार चिपकाते हैं कि उनका एक नुकीला भाग बाहर की ओर निकला रहे। इसमें गोबर देशज तथा पवित्रता का प्रतीक है। घर में जनन अशौच से जो अपावनता आ जाती है, गोबर उसका निदान तथा पर्यावरण शोधक है। जौ धन धान्य का प्रतीक है। इसके नुकीले भाग सांसारिक बाधाओं से सन्घर्ष के प्रतीक हैं। चक्राकार सांतिया गतिशीलता प्रगति तथा गणेश जी का लिपीय स्वरुप होने के कारण विघ्न विनाशक का प्रतीक हैं। इस प्रकार शिशु जन्म पर बना यह आलेखन विघ्न विनाशकता, परिवार की प्रगति, साहसिकता, धनधान्य वृद्धि तथा समृद्धि का सन्देश–वाहक है।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

धातु शिल्प आभूषण, गुदना **Metal Craft Ornament Tattoo**